ललितपुर में भारतीय खाद्य निगम के गोदामों में खाद्यान्नों का सड़ना और चोरी चला जाना

2128. **श्री शरद यादव** : क्या **खाद्य और नागरिक पूर्ति** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले दो वर्षों के दौरान ललितपुर, उत्तर प्रदेश में भारतीय खाद्य निगम के गोदामों में कितना खाद्यान्न सड़ा और कितना चोरी चला गया ;

(ख) क्या यह सच है कि इस चोरी में निगम के कुछ अधिकारी और कर्मचारी भी शामिल थे; और

(ग) यदि हां, तो उन अधिकारियों और कर्मचारियों के नाम क्या हैं और उनके विरुद्ध क्या कार्यवाही की गई है ?

योजना और खाद्य तथा नागरिक पूर्ति मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अजीत पांजा) : (क) ललितपुर में कैप भंडारण के अन्तर्गत रखे गये 1.07 लाख मीटरी टन गेहूं का स्टाक वर्षा से प्रभावित हुआ था । इस स्टाक को अब अलग-अलग किया जा रहा है और उसका निस्तारण किया जा रहा है । क्षतिग्रस्त अथवा लापता स्टाक की मात्रा के बारे में तब पता चलेगा जब ये कार्य पूरे हो जायेंगे ।

(ख) और (ग) गेहूं के संदिग्ध गबन के दो मामलों की जांच की जा रही है ।

भारतीय खाद्य निगम के गोदामों में नष्ट हुआ खाद्यान्न

2183. **श्री शरद यादव** : क्या **खाद्य और नागरिक पूर्ति** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारतीय खाद्य निगम के प्रारम्भ से लेकर अब तक इसके सभी स्थायी और अस्थायी गोदामों में अन्य कारणों से कितना खाद्यान्न सड़ा, चोरी चला गया और नष्ट हो गया ;

(ख) उपर्युक्त कारणों से प्रतिवर्ष कितना खाद्यान्न नष्ट होता है; और

(ग) खाद्यन्नों को नष्ट होने से बचाने के लिए क्या-क्या पाय किए गए हैं या किये जाने का विचार है ?

योजना और खाद्य तथा नागरिक पूर्ति मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अजीत पांजा) : (क) भारतीय खाद्य निगम को भण्डारण में खाद्यान्नों की कुल हानि का वर्ष-वार ब्यौरा नीचे दिया जाता है :

(मात्रा लाख मीटरी टन में)

वर्ष	जारी की गई कुल मात्रा	भण्डारण में हुई हानि की मात्रा	जारी की गई मात्रा के संदर्भ में भण्डारण हानि की प्रतिशतता
1973–74 . . .	241.7	0.58	0.24
1974–75 . . .	207.1	0.58	0.28
1975–76 . . .	236.4	0.26	0.11
1976–77 . . .	261.5	0.68	0.26
1977–78 . . .	292.5	1.24	0.42
1978–79 . . .	325.1	0.99	0.39
1979–80 . . .	255.9	2.02	0.62
1980–81 . . .	320.3	2.82	0.88
1981–82 . . .	316.3	2.42	0.77
1982–83 . . .	349.4	2.26	0.65
1983–84 . . .	355.1	2.08	0.59
1984–85 . . .	301.7	1.80	0.60

निगम के वार्षिक लेखों में पिछली अवधि में हुई भण्डारण हानियों का अलग से कोई उल्लेख नहीं किया गया था। 1985-86 और वर्तमान वर्ष के लेखों को अभी अन्तिम रूप नही दिया गया है।

(ख) पिछले तीन वर्षों के दौरान क्षतिग्रस्त हुए खाद्यान्नों की मात्रा नीचे दी जाती है :—

(मात्रा लाख मीटरी टन में)

वर्ष	स्टाक रखने की मात्रा (औसत)	क्षतिग्रस्त हुई मात्रा	प्रतिशतता
1982-83	96.02	0.48	0.50
1983-84	118.85	1.01	0.85
1984-85	163.15	0.65	0.40

(ग) ढ़की हुई भण्डारण क्षमता को बढ़ाने, कैप भण्डारण (कवर और प्लिथ) को कम करने, बेहतर परिरक्षण और वज्ञानिक भण्डारण करने तथा कड़े गुण नियंत्रण उपायों को अपनाने सहित खाद्यान्नों की हिफाजत करने के लिये कई एक पग उठाए जाते हैं।

ललितपुर स्थित भारतीय खाद्य निगम के गोदामों में सड़ रहा गेहूं

2184. **श्री शरद यादव** : क्या **खाद्य और नागरिक पूर्ति** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि ललितपुर स्थित भारतीय खाद्य निगम के गोदाम में गेहूं की हजारों बोरियां सड़ रही हैं और इसके फलस्वरूप ललितपुर शहर तथा इसके समीपवर्ती बीस गांवों के लोगों को स्वास्थ्य का खतरा पैदा हो गया है और फलतः ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गयी है जिसमें ललितपुर के जिलाधिकारी को "पब्लिक न्यूसेंस" के अन्तर्गत भारतीय खाद्य निगम को नोटिस देना पड़ा है; और

(ख) यदि हां, तो इस समस्या से निपटने के लिए निगम द्वारा क्या प्रबन्ध किये गये हैं ?

योजना और खाद्य तथा नागरिक पूर्ति मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अजीत पांजा) : (क) जी, हां। ललितपुर हवाईपट्टी पर भण्डारित किया गया गेहूं का कुछ स्टा क वर्षा के कारण क्षतिग्रस्त हो गया था।

(ख) खाद्यान्नों को अलग करने तथा हवाईपट्टी साफ करने के लिए विभिन्न पग उठाये गए हैं। क्षतिग्रस्त खाद्यान्नों को अलग किया जा रहा है और उनका निपटान किया जा रहा है तथा अच्छे खाद्यान्नों की उचित ढंग से देख-रेख करने तथा उनका उपचार करने के लिए उनको ढके हुए गोदामों मे अन्तरित किया जा रहा है।

2185. [Transferred to the 13th August, 1986.]

Use of Mustard Oil in Vanaspati Production

2186. SHRI J. P. GOYAL: Will the Minister of FOOD AND CIVIL SUPPLIES be pleased to state:

(a) whether a decision has been taken to reduce the percentage of mustard oil in the manufacture of vanaspati;

(b) if so, what are the details in this regard;